The Knowledge Spectrum: An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3107-3557 (Online)

47

वैश्वीकरण और भारतीय संस्कृति का संरक्षण

Kalpana
Research Scholar
Manipur International University, Manipur

सारांश (Abstract):

वैश्वीकरण आधुनिक युग की एक ऐसी व्यापक प्रक्रिया है, जिसने विश्व के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप विश्व एक "वैश्विक ग्राम" के रूप में विकसित हुआ है, जहाँ विभिन्न राष्ट्रों एवं संस्कृतियों के मध्य निरंतर संपर्क एवं संवाद स्थापित हुआ है। भारतीय संस्कृति, जो अपनी प्राचीनता, आध्यात्मिकता, विविधता तथा सहिष्णु मूल्यों के लिए विख्यात रही है, वैश्वीकरण के प्रभाव से अछूती नहीं रही है। एक ओर वैश्वीकरण ने भारतीय योग, ध्यान, आयुर्वेद, दर्शन और सांस्कृतिक मूल्यों को वैश्विक पहचान प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर पश्चिमीकरण, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक समरूपता और पारंपरिक मूल्यों के क्षरण जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य वैश्वीकरण की अवधारणा का विश्लेषण करना, भारतीय संस्कृति पर इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों की विवेचना करना तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु संभावित उपायों पर विचार प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि वैश्वीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करना आज की प्रमुख आवश्यकता है।

मुख्य शब्द (Keywords): वैश्वीकरण, भारतीय संस्कृति, सांस्कृतिक संरक्षण, पश्चिमीकरण, परंपरा, आधुनिकता

---

1. भूमिका (Introduction):

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम जीवित संस्कृतियों में से एक है। इसकी मूल विशेषताएँ—आध्यात्मिक चेतना, सहिष्णुता, विविधता में एकता, कर्तव्यबोध और नैतिक मूल्य—भारतीय समाज को विशिष्ट पहचान प्रदान करती हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिक दृष्टि को अभिव्यक्त करती है।

इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण के तीव्र विस्तार ने भारतीय समाज को अनेक स्तरों पर प्रभावित किया है। आर्थिक उदारीकरण, सूचना क्रांति, उपभोक्ता संस्कृति और वैश्विक मीडिया के प्रभाव से भारतीय जीवन-शैली, पारिवारिक संरचना तथा सांस्कृतिक मूल्यों में उल्लेखनीय परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि वैश्वीकरण के संदर्भ में भारतीय संस्कृति के संरक्षण पर गंभीर विमर्श किया जाए।

2. वैश्वीकरण की अवधारणा एवं स्वरूप:

वैश्वीकरण का तात्पर्य विभिन्न देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक अंतर्संबंधों के विस्तार से है। यह प्रक्रिया मुख्यतः औद्योगीकरण, पूँजीवादी अर्थव्यवस्था, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विकास से गति प्राप्त करती है।

सांस्कृतिक वैश्वीकरण के अंतर्गत जीवन-शैली, भाषा, खान-पान, पहनावा, मनोरंजन तथा मूल्यों का वैश्विक स्तर पर प्रसार होता है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक आदान-प्रदान तो बढ़ता है, किंतु साथ ही स्थानीय संस्कृतियों के समक्ष अस्तित्व का संकट भी उत्पन्न हो सकता है।

3. भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव:

वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों में सबसे प्रमुख है भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर प्राप्त पहचान। योग और ध्यान आज अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं जीवन-शैली का महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं। आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा और भारतीय दर्शन को विश्वभर में स्वीकार्यता मिली है।

भारतीय संगीत, नृत्य, कला और साहित्य को वैश्विक मंच प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित किया है, जिससे विभिन्न संस्कृतियों के मध्य पारस्परिक समझ एवं सहिष्णुता का विकास हुआ है। भारतीय युवाओं में वैश्विक दृष्टिकोण, नवाचार और सृजनशीलता का विस्तार भी वैश्वीकरण का एक सकारात्मक पक्ष है।

4. भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव:

जहाँ वैश्वीकरण ने अवसर प्रदान किए हैं, वहीं इसके नकारात्मक प्रभाव भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। पश्चिमी जीवन-शैली का अंधानुकरण, उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों का विस्तार और भौतिकतावाद का प्रभाव भारतीय समाज में तेजी से बढ़ा है।

संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन, पारंपरिक नैतिक मूल्यों में गिरावट तथा स्थानीय भाषाओं और लोककलाओं की उपेक्षा जैसी समस्याएँ उभरकर सामने आई हैं। वैश्विक मीडिया एवं विज्ञापन संस्कृति ने भारतीय समाज में कृत्रिम आवश्यकताओं को जन्म दिया है, जिससे सांस्कृतिक अस्मिता को चुनौती मिली है।

5. भारतीय संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता:

संस्कृति किसी भी समाज की आत्मा होती है। भारतीय संस्कृति का संरक्षण इसलिए आवश्यक है क्योंकि यही हमारी राष्ट्रीय पहचान, सामाजिक एकता और नैतिक चेतना का आधार है। संस्कृति केवल परंपराओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह जीवन-दृष्टि और मूल्य-बोध का स्रोत है।

यदि सांस्कृतिक संरक्षण की उपेक्षा की गई, तो आने वाली पीढ़ियाँ अपनी जड़ों से कट सकती हैं, जिससे पहचान-संकट और मानसिक असंतुलन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। अतः वैश्वीकरण के इस युग में सांस्कृतिक संरक्षण एक अनिवार्य दायित्व बन जाता है।

6. भारतीय संस्कृति के संरक्षण के उपाय:

भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान-परंपरा, इतिहास, दर्शन और सांस्कृतिक मूल्यों को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भारतीय संस्कृति आधारित पाठ्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए।

डिजिटल तकनीक के माध्यम से लोकभाषाओं, लोककलाओं, परंपराओं और पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, युवाओं में सांस्कृतिक चेतना विकसित करने हेतु सांस्कृतिक उत्सवों, कार्यशालाओं और जन-अभियानों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

नीतिगत स्तर पर सरकार एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा सांस्कृतिक संरक्षण से संबंधित योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू करना भी आवश्यक है।

7. निष्कर्ष (Conclusion):

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण एक अपरिहार्य प्रक्रिया है, जिसे न तो रोका जा सकता है और न ही पूर्णतः अस्वीकार किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि वैश्वीकरण को अपनाते हुए भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा—उसके मूल्य, परंपराएँ और आध्यात्मिक चेतना—को सुरक्षित रखा जाए।

संतुलन, सजगता और सांस्कृतिक आत्मबोध के माध्यम से ही भारतीय संस्कृति वैश्वीकरण के युग में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखते हुए विश्व मंच पर सशक्त भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ सूची:

1. Appadurai, A. (1996). Modernity at Large: Cultural Dimensions of Globalization. University of Minnesota Press.
2. Giddens, A. (1990). The Consequences of Modernity. Stanford University Press.
3. Tomlinson, J. (1999). Globalization and Culture. University of Chicago Press.